११. समता आंदोलन

आधुनिक भारत की यात्रा में राजनीतिक स्वाधीनता का संग्राम महत्त्वपूर्ण था । यह संग्राम मानवमुक्ति के व्यापक सिद्धांत पर आधारित था । परिणामस्वरूप इस संघर्ष के साथ-साथ राजनीतिक पराधीनता, सामंतशाही, सामाजिक विषमता, आर्थिक शोषण जैसी बातों का भी विरोध होने लगा । स्वतंत्रता की भाँति समता के सिद्धांत को भी बहुत महत्त्व प्राप्त है । इस रूप में किसान, श्रमिक, महिला, दलित आदि वर्गों द्वारा चलाए गए आंदोलनों और समता तत्त्व को महत्त्व देने वाले समाजवाद की विचारधारा का योगदान बहुमूल्य रहा । इसका विचार किए बिना हम आधुनिक भारत के निर्माण के ताने-बाने को समझ नहीं सकेंगे । अतः हम कुछ आंदोलनों का अध्ययन करेंगे ।

किसान आंदोलन : भारतीय किसानों को अंग्रेजों की आर्थिक नीति के दुष्परिणाम भोगने पड़ते थे । अंग्रेजी शासन जमींदार, साहूकार को संरक्षण प्रदान करता था । वे किसानों पर अत्याचार करते थे । इस अन्याय के विरुद्ध किसानों ने अनेक बार विद्रोह किए । बंगाल के किसानों ने नील उत्पादकों की सख्ती के विरुद्ध विद्रोह किया । इसके लिए उन्होंने 'कृषि संगठन' की स्थापना की । दीनबंधु मित्र द्वारा लिखित 'नीलदर्पण' ने नील उगाने वाले किसानों की खस्ता हालत के दर्शन पूरे समाज को करवाए । १८७५ ई. में महाराष्ट्र के किसानों ने जमींदारों और साहूकारों के अत्याचारों के विरुद्ध बहुत बड़ा विद्रोह किया । १९१८ ई. में बाबा रामचंद्र के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश के किसानों ने 'किसान सभा' नाम के संगठन की स्थापना की । केरल में मोपला किसानों ने बहुत बड़ा विद्रोह किया । ब्रिटिश सरकार ने इस विद्रोह को कुचल दिया ।

१९३६ ई. में प्रा.एन.जी.रंगा के नेतृत्व में 'अखिल भारतीय किसान सभा' की स्थापना हुई । इस सभा के अध्यक्ष स्वामी सहजानंद सरस्वती थे । इस सभा ने किसानों के अधिकारों का घोषणापत्र राष्ट्रीय कांग्रेस को प्रस्तुत किया । १९३६ ई. में महाराष्ट्र के ग्रामीण क्षेत्र फैजपुर में राष्ट्रीय कांग्रेस का अधिवेशन आयोजित किया गया था । इस अधिवेशन में हजारों किसान उपस्थित थे ।

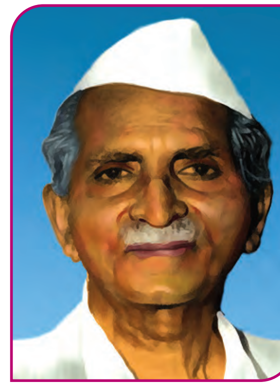

प्रा.एन.जी.रंगा

साने गुरुजी

१९३८ ई. में पूर्व खानदेश में अतिवर्षा होने से फसल चौपट हो गई थी । किसानों की बहुत दुर्गति हो गई । ऐसी स्थिति में किसानों के लगान को माफ करवाने के लिए साने गुरुजी ने स्थान-स्थान पर सभाएँ लीं, जुलूस निकलवाए । कलेक्टर कचहरी पर जुलूस निकाले । १९४२ ई. की क्रांति में किसान बड़ी संख्या में सम्मिलित हुए थे ।

क्या तुम जानते हो ?

साने गुरुजी ने किसानों और श्रमिकों को एकजुट किया । उनका प्रयास यह था कि धुले-अमलनेर श्रमिक संगठनों के शक्तिशाली केंद्र बनें । वे अमलनेर मिल श्रमिक यूनियन के अध्यक्ष थे ।

पंढरपुर का विठ्ठल मंदिर दलितों के लिए खोला जाए; इसके लिए उन्होंने पंढरपुर में आमरण अनशन किया ।

श्रमिक संगठन : उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भारत में कपड़ा मिलें, रेल कंपनियाँ जैसे उद्योग प्रारंभ हुए थे । श्रमिक वर्ग का बड़ी मात्रा में उदय

नारायण मेघाजी लोखंडे

नहीं हुआ था । फिर भी इस अवधि में श्रमिकों की समस्याओं को हल करने के प्रयास किए गए । शशिपद बनर्जी, नारायण मेघाजी लोखंडे ने स्थानीय स्तर पर श्रमिकों के संगठन बनाए । लोखंडे ने श्रमिकों को लेकर इतना उल्लेखनीय कार्य किया है कि उन्हें 'भारतीय श्रमिक आंदोलन का जनक' कहकर संबोधित किया जाता है ।

क्या तुम जानते हो ?

नारायण मेघाजी लोखंडे मूलतः कान्हेसर गाँव के निवासी थे । यह गाँव पुणे जिले के सासवड़ के पास है । १९८० ई. में उन्होंने 'बॉम्बे मिल हैंडस एसोसिएशन' नामक मिल श्रमिकों का संगठन स्थापित किया । इस श्रमिक संगठन को भारत में संगठित आंदोलन का प्रारंभ माना जाता है । वे महात्मा फुले द्वारा स्थापित सत्यशोधक समाज की मुंबई शाखा के अध्यक्ष भी थे । उन्हीं के प्रयासों से १० जून १८९० ई. से श्रमिकों को रविवार को साप्ताहिक अवकाश मिलने लगा ।

इसी समय असम में चाय के बागान श्रमिकों की दारुण स्थिति के विरुद्ध आंदोलन किया गया । १८९९ ई. में ग्रेट इंडियन पेनिंसुलर (जी.आई.पी.) के रेल कर्मचारियों ने अपनी माँगों को लेकर हड़ताल की घोषणा कर दी । बंग भंग आंदोलन की अवधि में स्वदेशी के समर्थन में कर्मचारियों ने समय-समय पर हड़तालें कीं । प्रथम विश्वयुद्ध के बाद भारत में औद्योगिकीकरण के परिणाम स्वरूप कर्मचारी वर्ग में वृद्धि हो गई थी । तब कहीं जाकर राष्ट्रव्यापी श्रमिक संगठन की आवश्यकता अनुभव होने लगी । इस आवश्यकता का परिणाम यह हुआ कि १९२० ई. में ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस (आईटक) की स्थापना की गई । आईटक के कार्यों में ना.म.जोशी का उल्लेखनीय योगदान रहा । लाला लजपतराय आईटक के प्रथम अधिवेशन के अध्यक्ष थे । उन्होंने कहा था, ''श्रमिकों को राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय सहभाग लेना चाहिए ।''

श्रमिक वर्ग में समाजवादी विचारों का प्रसार करके उनके जुझारू संगठन बनाने का कार्य श्रीपाद अमृत डांगे, मुजफ्फर अहमद आदि समाजवादी नेताओं ने किया। १९२८ ई. में मुंबई के मिल श्रमिकों ने छह महीने हड़ताल की । ऐसी अनेक हड़तालें रेल कर्मचारियों, पटसन कर्मियों आदि ने कीं । श्रमिक आंदोलन की बढ़ती शक्ति देखकर सरकार व्यग्र हो गई । इस आंदोलन को दबाने के लिए कानून बनाए गए । श्रमिकों का यह संघर्ष राष्ट्रीय आंदोलन को सहायता करने वाला सिद्ध हुआ ।

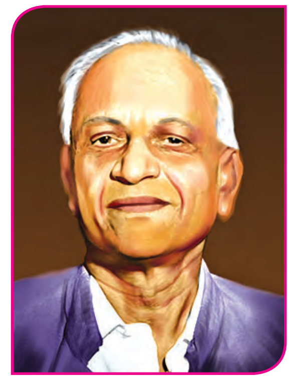

श्रीपाद अमृत डांगे

समार वाी आंालन : राष्ट्रीय कांग्रेस के अनेक युवा कार्यकर्ताओं को अनुभव होने लगा कि सामान्य लोगों के हितों की रक्षा करने के लिए अंग्रेज सरकार का तख्ता पलट देना आवश्यक है । साथ ही; उन्हें यह भी बोध होने लगा कि आर्थिक और सामाजिक समता के सिद्धांत पर समाज की पुनर्रचना होनी चाहिए । इस बोध द्वारा समाजवादी विचारधारा का उदय और विकास हुआ ।

राष्ट्रीय कांग्रेस के समाजवादी युवक नाशिक कारावास में बंद थे । वहाँ उन्होंने राष्ट्रीय कांग्रेस के भीतर ही समाजवादी दल स्थापित करने का निर्णय लिया । इस निर्णय के अनुसार १९३४ ई. में कांग्रेस समाजवादी पार्टी की स्थापना की गई । इसमें आचार्य नरेंद्र देव, जयप्रकाश नारायण, मीनू मसानी, डॉ. राममनोहर लोहिया आदि नेता थे । १९४२ ई. के 'भारत छोड़ो आंदोलन' में समाजवादी युवक अग्रसर थे ।

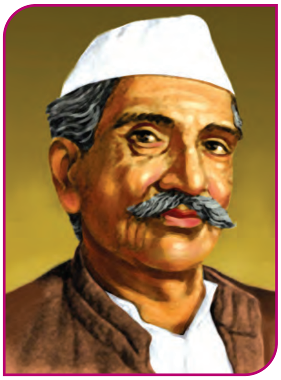

आचार्य नरेंद्र देव

डॉ. राममनोहर लोहिया

भारतीयों को कार्ल मार्क्स और उसके साम्यवाद का परिचय होने लगा था । लोकमान्य तिलक ने १८८१ ई. में ही मार्क्स के विषय में लेख लिखा था । प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात भारत में साम्यवाद का प्रभाव अनुभव किया जाने लगा । मानवेंद्रनाथ रॉय का अंतर्राष्ट्रीय साम्यवादी आंदोलन में सक्रिय सहभाग था ।

१९२५ ई. में भारत में साम्यवादी दल की स्थापना हुई । श्रमिकों एवं किसानों के लड़ाकू संगठन स्थापित करने का कार्य समाजवादी युवकों ने किया । सरकार को साम्यवादी आंदोलनों से खतरा अनुभव होने लगा । सरकार ने इस आंदोलन को कुचलने का निर्णय किया । श्रीपाद अमृत डांगे, मुजफ्फर अहमद, केशव नीलकंठ जोगलेकर आदि को बंदी बनाया गया । उनपर अंग्रेज शासन का तख्ता पलट देने का षडयंत्र रचने का अभियोग रखा गया । उन्हें अलग-अलग सजाएँ सुनाई गईं । यह मुकदमा मेरठ में चलाया गया । अतः इसे 'मेरठ षडयंत्र मुकदमा' कहते हैं । मेरठ मुकदमे के बाद भी श्रमिकों के आंदोलन पर साम्यवादियों का प्रभाव स्थायी रूप में रहा ।

मलर्हा के आंदोलन : भारतीय समाज व्यवस्था में महिलाओं को दोयम स्थान प्राप्त था । कई अनिष्ट प्रथाओं और रीति-रिवाजों के कारण उन पर अन्याय होता था परंतु आधुनिक समय में इसके विरुद्ध जागृति होने लगी । महिलाओं के विषय में होने वाले सुधार आंदोलन में कुछ पुरुष सुधारकों ने आगे बढ़कर हिस्सा लिया । कालांतर में महिलाओं का नेतृत्व आगे आने लगा । उनकी स्वतंत्र संस्थाएँ और संगठन भी स्थापित होने लगे । पंडिता रमाबाई द्वारा स्थापित 'आर्य महिला समाज' और 'शारदा सदन' संस्थाएँ तथा रमाबाई रानडे द्वारा स्थापित 'सेवा सदन' संस्था उसके कुछ उदाहरण हैं । 'भारत महिला परिषद' (१९०४ ई.), 'ऑल इंडिया वूमेंस कॉन्फरेंस' (१९२७ ई.) जैसी संस्थाओं की भी स्थापना हुई । परिणामतः यह संस्थात्मक कार्य राष्ट्रीय स्तर पर जा पहुँचा । इन संगठनों के माध्यम से महिलाएँ उत्तराधिकार, मतदान का अधिकार जैसी समस्याओं को लेकर संघर्ष करने लगीं ।

पंडिता रमाबाई

रमाबाई रानडे

भारत में वैद्यकीय सेवाएँ प्रदान करने वाली प्रथम महिला डॉक्टर रखमाबाई जनार्दन सावे हैं । उन्होंने स्त्रियों के लिए स्वास्थ्य विषयक व्याख्यानमालाएँ चलाईं । उन्होंने राजकोट में रेड क्रॉस सोसाइटी की शाखा प्रारंभ की ।

डॉ. रखमाबाई सावे

बीसवीं शताब्दी में सार्वजनिक जीवन में स्त्रियों का सहभाग बढ़ने लगा । राष्ट्रीय आंदोलन और क्रांतिकार्य में स्त्रियों का सहभाग महत्त्वपूर्ण रहा । १९३५ ई. के कानून के पश्चात प्रांतीय मंत्रिमंडल में भी स्त्रियों का समावेश हुआ । स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय संविधान में स्त्री-पुरुष समानता के सिद्धांत को स्थान दिया गया है ।

क्या तुम जानते हो ?

डॉ. आनंदीबाई जोशी : भारत की प्रथम महिला डॉक्टर है । उनका बेटा दस दिन का था; तब वह चल बसा । यही दुख उन्हें चिकित्सा शिक्षा की ओर ले जाने लिए कारण बना । उन्होंने मार्च १८८६ ई. में एम.डी. की उपाधि धारण की । भारत लौटते समय आनंदीबाई को क्षयरोग (टी.बी.) हुआ । आगे चलकर १६ फरवरी १८८७ ई. को पुणे में उनकी मृत्यु हुई ।

डॉ. आनंदीबाई जोशी

दलित आंदोलन : भारत की समाज रचना विषमता पर आधारित थी । समाज में दलितों के साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार किया जाता था । इस अन्यायपूर्ण व्यवहार के विरुद्ध महात्मा जोतीराव फुले, नारायण गुरु जैसे समाज सुधारकों ने जनजागरण किया । महात्मा फुले द्वारा दी गई सीख का अनुसरण करते हुए गोपालबाबा वलंगकर, शिवराम जानबा कांबले ने अस्पृश्यता उन्मूलन का कार्य किया। १८८८ ई. में गोपालबाबा वलंगकर ने 'विटाळ विध्वंसन' (अछूत ध्वंसन) पुस्तक द्वारा अस्पृश्यता का खंडन किया । शिवराम जानबा कांबले ने १ जुलाई १९०८ ई. को 'सोमवंशीय मित्र' नाम की मासिक पत्रिका प्रारंभ की । मुरलियों (देवदासी) और जोगतिनों (जोगिन) की समस्याओं को वाणी दी । साथ ही; देवदासियों के विवाह के लिए आगे बढ़कर प्रयास किए । तमिलनाडु में पेरियार रामस्वामी ने अस्पृश्यता उन्मूलन हेतु आंदोलन प्रारंभ किया ।

महर्षि विठ्ठल रामजी शिंदे ने दलितों की उन्नति के लिए १९०६ ई. में 'डिप्रेस्ड क्लासेस मिशन' नाम की संस्था स्थापित की । दलितों को आत्मसम्मान दिलाना, उन्हें शिक्षित और उद्यमी बनाना आदि उनके समाज कार्य का महत्त्वपूर्ण हिस्सा था तथा उच्च वर्णियों के मन से दलितों के बारे में जो भ्रामक मान्यताएँ हैं; उन्हें दूर करना उनके कार्य का दूसरा भाग था । इसके लिए उन्होंने मुंबई में परेल, देवनार में मराठी विद्यालय और उद्योग शालाएँ खोलीं । पुणे में पर्वती मंदिर में प्रवेश हेतु हुए सत्याग्रह, दलितों के लिए आयोजित किसान परिषद, संयुक्त निर्वाचन क्षेत्र योजना आदि विषय में दलित वर्ग के हितों की दृष्टि से वे पूरी सक्रियता से हिस्सा लेते थे ।

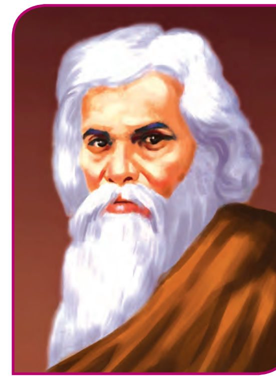

महर्षि विठ्ठल रामजी शिंदे

राजर्षि शाहू महाराज

राजर्षि शाहू महाराज ने डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर के नेतृत्व को समर्थन दिया। उन्हीं की अवधि में ब्राह्मणेतर आंदोलन प्रारंभ हुआ। इस आंदोलन का उन्होंने नेतृत्व किया । राजर्षि शाहू महाराज ने कोल्हापुर रियासत में आरक्षण का क्रांतिकारी घोषणापत्र जारी किया । निःशुल्क और अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा का कानून बनाया । उन्होंने जातिभेद उन्मूलन के लिए ठोस कार्य किया । जातिव्यवस्था में रोटीबंदी, बेटीबंदी और व्यवसाय बंदी ये तीन प्रतिबंध लगे हुए थे । इस संदर्भ में उन्होंने सभाओं, परिषदों का आयोजन कर उनमें दलित लोगों के हाथों से भोजन ग्रहण किया और रोटीबंदी सार्वजनिक रूप से ठुकरा दी । शाहू महाराज की धारणा थी कि जब तक बेटीबंदी का पालन समाज में किया जाता रहेगा, तब तक जातिभेद समूल नष्ट नहीं होगा। उन्होंने अपनी रियासत में अंतर्जातीय विवाह को विधिवत मान्यता प्रदान करनेवाला कानून पारित किया। २२ फरवरी

१९१८ ई. को कोल्हापुर सरकार के गजट में घोषणापत्र प्रकाशित हुआ और रियासत में प्रचलित परजा-पवनी पद्धति (बलुतेदार पद्धति) नष्ट कर दी गई । सभी को अपनी पसंद का व्यवसाय चुनने और करने की अनुमति प्रदान की गई । शाहू महाराज ने व्यवसाय स्वतंत्रता प्रदान कर एक तरह से सामाजिक दासता से लोगों को मुक्ति दिलाई ।

ठक्कर बाप्पा

दक्षिण भारत में जस्टिस पार्टी ने सामाजिक समता को लेकर बहुमूल्य कार्य किया । महात्मा गांधी ने अस्पृश्यता की समस्या को प्राथमिकता देकर उसे कांग्रेस पार्टी के मंच पर रखा । जब वे येरवड़ा जेल में बंदी थे; तब उन्होंने सनातनी हिंदू पंडितों के साथ शास्त्रार्थ किया और प्रतिपादित किया कि अस्पृश्यता के लिए किसी भी शास्त्र का आधार नहीं है । उन्होंने हरिजन सेवक संघ को प्रेरणा दी । उनसे प्रेरणा लेकर अमृतलाल विठ्ठलदास ठक्कर उर्फ ठक्कर बाप्पा, आप्पासाहेब पटवर्धन आदि कार्यकर्ताओं ने समता स्थापित करने के कार्य में स्वयं को झोंक किया ।

डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर के नेतृत्व में दलितों का संघर्ष प्रारंभ हुआ । स्वतंत्रता, समता और बंधुता सिद्धांतों पर आधारित समाज का निर्माण करना डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर का लक्ष्य था । उनका मानना था कि जब तक जाति व्यवस्था समूल नष्ट नहीं हो जाती तब तक दलितों पर हो रहे अन्याय और अत्याचार का अंत नहीं होगा । समता का अधिकार दलितों का अधिकार है । उन्हें आत्मसम्मान पर आधारित आंदोलन अभिप्रेत था । इसी भूमिका को ध्यान में रखकर उन्होंने जुलाई १९२४ ई. में 'बहिष्कृत हितकारिणी सभा' की स्थापना की । उन्होंने अपने अनुयायियों को 'पढ़ो, संगठित हो जाओ और संघर्ष करो' का स्फूर्तिदायक संदेश दिया ।

बाबासाहेब बोले ने मुंबई प्रांत के विधान सभा में सार्वजनिक पनघट और जलाशय अस्पृश्यों के लिए खुले कर देने का विधेयक पारित करवा लिया था । फिर भी वास्तविकता यह थी कि दलितों के लिए ये पनघट और जलाशय खुले नहीं थे । परिणामस्वरूप डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर और उनके अनुयायियों ने महाड़ के चवदार तालाब पर सत्याग्रह किया । उन्होंने विषमता का समर्थन करने वाले 'मनुस्मृति' का दहन किया । नाशिक के कालाराम

महाड़ के चवदार तालाब का सत्याग्रह

मंदिर में दलितों को प्रवेश मिले; इसलिए १९३० ई. में सत्याग्रह प्रारंभ किया । कर्मवीर दादासाहेब गायकवाड ने इस सत्याग्रह का नेतृत्व किया ।

समाचारपत्र डॉ.बाबाहेब आंबेडकर के आंदोलन का अभिन्न अंग थे । समाज में जागृति उत्पन्न करने और दुखों को वाणी देने के लिए डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर ने 'मूकनायक', 'बहिष्कृत भारत', 'जनता', 'समता' आदि समाचारपत्र प्रारंभ किए ।

डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर ने 'स्वतंत्र मजूर पक्ष' की स्थापना की । श्रमिकों के हित में जो कानून नहीं थे; उन कानूनों का उन्होंने विधान सभा में विरोध किया । दलितों की समस्याओं को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने के लिए उन्होंने १९४२ ई. में 'शेड्यूल्ड कास्ट फेडरेशन' की स्थापना की । आधुनिक भारत में समता पर आधारित समाज रचना का निर्माण करने के कार्य में डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर ने भारतीय संविधान द्‌वारा महत्त्वपूर्ण योगदान दिया । उन्होंने १९५६ ई. में नागपुर में अपने असंख्य अनुयायियों के साथ मानवता और समता का समर्थन करने वाले बौद्‌ध धर्म को स्वीकार किया ।

आधुनिक भारत के निर्माण में समता के लिए किए गए संघर्ष को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है ।

स्वाध्याय

१. तिए गए तक्कल्म से उतचा तिक्कल्म चनकर कथन पनः तलाि ।

(लाला लजपतराय, साने गुरुजी, रखमाबाई जनार्दन सावे)

(१) .... ने राजकोट में रेड क्रॉस सोसाइटी की स्थापना की ।

(२) अमलनेर मिल श्रमिक यूनियन के अध्यक्ष .... थे ।

(३) आईटक के प्रथम अधिवेशन के अध्यक्ष .... थे ।

२. तटप्पणी तलाि ।

(१) महर्षि विठ्‌ठल रामजी शिंदे का सामाजिक कार्य ।

(२) राजर्षि शाहू महाराज द्‌वारा कोल्हापुर रियासत में किए गए सुधार ।

३. तन्म को कारणसतहा स्म करो ।

(१) सरकार ने साम्यवादी आंदोलन को कुचलने का निर्णय किया ।

(२) डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर ने मूकनायक, बहिष्कृत भारत जैसे समाचारपत्र प्रारंभ किए ।

(३) राष्ट्रव्यापी श्रमिक संगठन की आवश्यकता अनुभव होने लगी ।

४. तन्म न के उत्तर `प तलाि ।

(१) आधुनिक भारत के निर्माण में समता का संघर्ष महत्त्वपूर्ण क्यों है ?

(२) पूर्व खानदेश में साने गुरुजी द्‌वारा किए गए कार्य लिखो ।

(३) श्रमिकों द्‌वारा प्रारंभ किए संघर्ष राष्ट्रीय आंदोलन के लिए किस प्रकार सहायक सिद्‌ध हुए ?

(४) स्त्रियों से संबंधित आंदोलन का स्वरूप स्पष्ट करो ।

(१) डॉ.आनंदीबाई जोशी के जीवन पर आधारित पुस्तक पढ़ो ।

(२) राजर्षि शाहू महाराज का चरित्रग्रंथ पढ़ो ।

9C65ZT